उपसंहार

उपसंहार

रामकथा भारतीय जन–मानस के साथ इस प्रकार पूर्णतः धुलमिल गई है कि इसमें भारतीय संस्कति , सभ्यता, कला, विचारधारा और उच्चतन मानवीय आदर्शों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब झलकता है। शताब्दियों से अनवरत रूप में रामकथाधारा भारतीय जन–जीवन की समग्र सांस्कृतिक चेतना को अनुप्राणित करती आई है, जिसका प्रमुख प्रेरणा– स्रोत मर्यादा–पुरुषोत्तम राम का आदर्श पावन चरित्र ही है। रामकथा भारतीय संस्कृति का उज्ज्वलतम प्रतीक है। हमारी संस्कृति में आदिकाल से सत्य, अंहिसा, धैर्य, क्षमा, निर्वेदयता, अनासक्ति, इन्द्रिय–निग्रह, शुचिता, निष्कपटता, त्याग, उदारता और लोकसंग्रह आदि के जिन सात्विक तत्त्वों का समादर रहा है, उन सब का समाहार रामकथा में दिखाई पड़ता है वैसा अन्यत्र नहीं दिखाई पडता है वैसा आर्यावर्त्त के बाहर भी प्राचीन काल से जो रामकथा का प्रचार रहा है। वह हमारी इसी सात्विक संस्कृति के प्रसार का प्रतीक है । यही कारण है कि भारत की प्रांतीय भाषाओं और निकटवर्ती देशों की जनभाषाओं में रामचरित को लेकर रामकथा विषयक जितने अधिक ग्रन्थों की रचना हुई है अन्य किसी भी चरित–नायक संबंधी काव्यों की नहीं। साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त सभी प्रान्तों के लोक–साहित्य में रामकथा का व्यापक रूप मिलता है, जिसमें लोकजीवन में व्याप्त रामकथा के अविच्छिन्न सांस्कृतिक ऐक्य को देखा जा सकता है। भारतीय पारिवारिक–जीवन में रामकथा नमक और जल के समान ऐसी घुल मिल गयी है कि उसके प्रभाव से अपने को पृथक कर भारतीय–व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक–विशेषताओं को जीवित नहीं रख सकता।

हरियाणवी का भाषा–क्षेत्र हिन्दी की अपेक्षा छोटा है। इसीलिए हिन्दी की अपेक्षा हरियाणवी में राम–चरित विषयक लोक–गीतों और काव्य–ग्रन्थों की संख्या भी अधिक नहीं है। हरियाणा प्रदेश में सबसे पूर्व "अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण" की रचना 1870–1895 की गई। उसके उपरान्त यशवन्त सिंह वर्मा 'टोहनवी' ने 'आर्य संगीत रामायण' की रचना भी हरियाणा में ही की गई। दोनों ही अपने–अपने हरियाणा प्रदेश के प्रमुख कथाकार हैं, इसी दृष्टिकोण से दोनों लेखकों की रामायणों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। दोनों लेखकों की रामायणों

में क्षेत्रीय वैशिष्ट्य, लोक–संस्कृति एवं रीति–रिवाजों का सामंजस्य मिलता है। हरियाणवी लोक–गीतों में राम–कथा के प्रधानतः दो रूप सुरक्षित है– नाम मात्र के लिए रामकथा के पात्रों का उल्लेख और परम्परागत रामकथा संबंधी वृत्तों का चित्रण, परन्तु यहाँ दोनों रामायणों की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि दोनों में कुछ ऐसे विशिष्ट लोक–तत्त्वों का समान रूप से समाहार हुआ है, जिनसे दोनों रामायणों में समान लोकरूप देखा जा सकता है, जिसमें रामकथा के आदर्श पात्र राम और सीता भी लोक एवं परिवार के ही सदस्य प्रतीत होते हैं। लोक साहित्य में राम–कथा के विस्तृत रूप के विद्यमान होते हुए भी हरियाणा में कई कारणों से रामकथा–काव्य की रचना का प्रारम्भ हिन्दी भाषी क्षेत्रों की अपेक्षा देर से हुआ। और इसका श्री गणेश किया अहमदबख्श थानेसरी ने और उसके उपरान्त यशवन्त सिंह वर्मा ने। परन्तु दोनों लेखकों के उपरांत हरियाणा के किसी अन्य लेखक ने इतना सहास नहीं दिखाया कि वह रामकथा काव्य की रचना कर सकें 'अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण'' सॉग शैली में तथा यशवन्त सिंह वर्मा 'टोहानवी' कृत 'आर्य संगीत रामायण' की रचना नाट्य शैली में लिखी गयी हैं 'अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण'कल्पना व बाल्मीकि रामायण पर आधारित है जब कि 'आर्य संगीत रामायण' तुलसीदास व प्रयोगों की सत्यता पर आधारित है। इस रामायण में गीत/गाने व नाट्य संवाद साथ–साथ चलते हैं, परन्तु अहमदबख्श ने कहीं पर भी नाट्य सवांदों का प्रयोग नहीं किया है केवल दोहों व मुकताल के द्वारा ही पात्रों के संवादों को व्यक्त किया गया है।

दोनों रामकथाओं में कुछ विभिन्नता होने के उपरानत भी विशिष्ट लोक–तत्त्वों का समान रूप से समाहार हुआ है, जिनसे दोनों रामायणों में रामकथा का समान लोकरूप देखा जा सकता हैं दोनों रामकथा–काव्यों में विशिष्ट लौकिक और सहित्यिक परम्पराओं का अनुसरण किया गया, जिसमें युगीन भावनाओं और विचारधाराओं का समावेश हुआ। काव्य ग्रन्थों में निजी साहित्यिक परम्पराओं का अनुसरण किया गया, जिसमें युगीन भावनाओं और विचारधाराओं का समावेश हुआ। काव्य–ग्रंथों में निजी साहित्यिक परम्पराओं का अनुसरण होने पर भी विषयगत व्यापकता में उत्तरोत्तर विकास देखा जा सकता है।

तुलनात्मक कथा–विवेचन से स्पष्ट होता है कि दोनों रामायणों के काव्यों की कथा का मुख्याधार 'बाल्मीकि रामायण' तथा तुलसी कृत 'रामचरित मानस' ही है। जिसमें राम–भक्ति

भावना के उत्तरोत्तर विकास के फलस्वरूप दोनों कवियों ने यथोचित परिवर्तन किए हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न राम–काव्यों, उपनिषदों और पुराणों का प्रभाव दोनों पर पड़ा है। किन्तु दोनों में मौलिक प्रसंगों एवं नवीन उद्‌भावनाओं का भी समावेश हुआ है।

'अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण' को छः काण्डों में विभक्त करके रामकथा का वर्णन किया गया है जिसमें–1. आदि काण्ड 2. अयोध्या काण्ड 3. अरण्य काण्ड 4. किष्किंधा काण्ड 5. सुन्दर काण्ड 6. लंका काण्ड है। ''आर्य संगीत रामायण को दृश्यों में विभक्त किया गया है जिसमें एक से अट्‌ठाईस दृश्य हैं जिसमें समस्त रामकथा का वर्णन किया गया है।

दोनों रामायणों में समस्त पात्रों को एक दृष्टिकोण विशेष में ढालने का प्रयास किया गया है किसी पात्र का सांसारिक मोह में पड़ना और उपदेश द्वारा उसे उबारा जाना, यह एक ऐसा मार्ग बना दिया गया है जिसके आगे विवशतावश अथवा स्वेच्छापूर्वक प्रत्येक पात्र नतमस्तक है। जिज्ञासुओं को दोनों रामायणों का अध्ययन करते करते पूर्वानुमान होने लगता हे कि कब कौन सा पात्र आने वाला है। अनेक पात्रों के अतिमानवीय क्रिया–कलापों और ऐन्द्रजालिक वर्णनों से चरित्रांकन में स्वभाविकता का अभाव सा है। ऐसा लगता है कि कवि घटनाओं के चमत्कार को अधिक महत्त्व प्रदान कर रहे हैं और उसका ध्यान पात्रों के बाह्य क्रिया–कलापों तक ही सीमित सा हो गया है। यह ठीक है कि कुछ अन्तर्कथाओं में मार्मिकता के दर्शन होते हैं, परन्तु अधिकतर स्थलों पर पात्रों का अपनापन कुछ भी नहीं रहता । परिस्थितियों के अनुकूल दोनों रामायणों में पात्रों के आचरण को गति दे पाने का काम मनोवैज्ञानिक स्तर पर नहीं हो पाया है। कैकेयी द्वारा वर मांगे जाने पर राम द्वारा राज्य त्याग करने के लिए दशरथ का कथन कितना शक्तिहीन हो जाता है। फिर राम के वनगमन से दशरथ में मानवोचित पीड़ा की अनुभूति न होना और भी आश्चर्य चकित है। भरत, शत्रुध्न और कैकेयी आदि राम को वन से लौटाने के लिए जाते जरूर हैं परन्तु इस प्रसंग का उद्‌देश्य लोकपरम्परा का अनुसरण मात्र है।

दोनों रामायणों में पात्रों के 'चरित्र–चित्रण' में परम्परागत 'चरित्रों' में अपने–अपने ढंग से यथोचित विकास भी हुआ है। परम्परागत गुण–तत्त्वों या चारित्रक दोषों के निर्वाह में आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी किया गया हैं रामभक्त कवियों द्वारा प्रधानतः राक्षस वर्ग के पात्रों को रामभक्त बनाने का प्रयत्न किया गया है और इस तरह अपने इष्ट राम के महान् चरित्र को

विकसित किया गया है जो भक्तों को मुक्ति प्रदान करने में विशिष्ट उदारता का परिचय देते है। रामकथा के प्रधान–पात्र राम और सीता के अलौकिक रूप के चित्रण में दोनों रामायणों में अधिकता से सामय मिलता है और उनके लौकिक चित्रण में आदर्श मानवीय गुणों का ही प्राधान्य दोनों में देखा जा सकता है। अन्य पात्रों में आदर्श और यथार्थ गुण–अवगुणों का सामंजस्य हुआ है। परम्परागत उपेक्षित और अर्द्धविकसित पात्रों के चरित्र विकास का प्रयत्न दोनों में किया गया है। किन्तु जहॉ हिन्दी के आधुनिक काल में रामकथा के उपेक्षित एवं अर्द्धविकसित पात्रों के चरित्र–विकास के लिए ही कई काव्य–ग्रंथों–साकेत, साकेत सन्त, उर्मिला और कैकयी आदि की रचना हुई, ऐसा कोई ग्रन्थ हरियाणवी में उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए 'अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण'' तथा ''आर्य संगीत रामायण'' में उर्मिला और माण्डवी का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। इस प्रकार से दोनों रामायणों का ध्यान कथा कहने की ओर अधिक है, पात्रों के चरित्र अंकन की ओर कम।

दोनों रामकथा–काव्यों में प्रकृति–चित्रण भी विविध रूपों में हुआ है उनमें से यहां तीन मुख्य रूपों–आलम्बन रूप में प्रकृति–चित्रण, अलंकरण रूप में प्रकृति–चित्रण तथा संवेदना–दर्शन रूप में प्रकृति–चित्रण की तुलना करने पर कवियों के दृष्टिकोण में अधिकतः साम्य ही मिलता हैं प्रकृति–चित्रण में अधिकाधिक क्षेत्रीय वैशिष्ट्य के ही उदाहरण प्राप्त होते हैं। दोनों रामायणों के प्रकृति वर्णन में सर्वप्रमुख विशेषता यही है कि उपमानों का विपुल प्रयोग किया गया हैं सभी स्थानों पर कवियों का उद्‌देश्य आलंकारिक भाषा प्रयुक्त करना ही है। दोनों रामायणों में पर्वत, देश, नगर द्वीप आदि दिखाई देते हैं।

प्रकृति वर्णन में कवियों ने जहॉ मानवीय भावों, व्यापारों, स्थितियों और मुद्राओं का साम्य प्रकृति के अवयवों के रूपों और व्यापारों से संयोजित किया, वे स्थल अवश्य काव्य सौन्दर्य में वृद्धि कर रहे हैं। प्रकृति के उपमान रूप और उपमेय रूपों में भावों और व्यापारों का सही रूपांकन करने में कवि को सफलता प्राप्त हुई ''अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण'' की भाषा के आलंकारिक प्रयोगों पर संस्कृत गद्य रचनाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है।

दोनों रामायणों की उत्कृष्ट रचनाओं में कवियों की उदात्त धर्मिक और नैतिक भावनाओं तथा विचारधाराओं का विषय एवं प्रसंगानुकूल समुचित निरूपण हुआ है। धर्म की व्यापक परिभाषा

दोनों में चरितार्थ होती है, जिसके अन्तर्गत भारतीय सनातन आर्य धर्म, भक्ति भावना और आदर्श मानव–धर्म की स्पष्ट रूप रेखा निर्दिष्ट होती है। भक्ति ही दोनों रामायणों की महती प्रेरणा है, इसलिए इसको प्रश्रय मिलना स्वाभाविक ही है। नैतिक विचारों का प्रतिपादन कवियों ने विशिष्ट नीति–ग्रंथों को दृष्टि में रखकर नहीं किया, प्रत्युत्त स्वाभाविक रूप में ही विभिन्न प्रसंगों में नीति–कथन भी सुगुम्फित हुए हैं। नैतिकता की मूल प्रवृत्तियों की ओर ही कवियों ने अधिक ध्यान दिया है। उदात्त और प्रबुद्ध मानसिक प्रवृत्तियों के विश्लेषण–विवेचन में कवियों के नैतिक विचार स्वतः स्पष्ट होते हैं। दोनों रामायणों में राजनैतिक विचारों का निरूपण अधिक संयमित रूप में हुआ है।

आलोच्य दोनों रामायणों में शास्त्रोक्त सभी रसों का निरूपण हुआ है जिसके साथ अंगी रस के रूप में भक्ति रख को भी जोड़ा जा सकता है। उत्कट भक्ति–भावना से विरचित काव्यों में सभी रसों का पर्यवसान भी प्रधानतः इस रस में होता हैं 'रस–परिपाक' के अन्तर्गत दोनों कवियों की विशिष्ट भाव–प्रवणता का भी यथेष्ट परिचय मिलता है। अनिष्ट प्राप्ति में मृत्यु चरमसीमा है। मृत्यु का समाचार पाकर या इष्ट व्यक्ति की मृत्यु देखकर हाहाकार मचाना ही मानव समाज का नैसर्गिक रूप है। इस अवसर पर किया गया विलाप सभी हृदयों की सहानुभूति की अपेक्षा रखता है। यह विलाप दूसरों के मन को शोकापन्न कर देता है। लक्ष्मण मूर्च्छा को मृत्यु समझकर राम–सेना में कुहराम मच जाता हैं कुम्भकरण, मेघनाथ व रावण की मृत्यु पर महिला व परिजन विलाप करते हैं। उनका विलाप करूणाजनक और मार्मिक है। इस प्रकार दोनों रामायणों में रस का सुन्दर, यथार्थ, मार्मिक, अवसरानुकूल और मनोवैज्ञानिक आधार पर हुआ है। करूण रस को व्यक्त करने वाले स्थल विरहजन्य स्थिति और मृत्यु के अवसर को लेकर लिखे गए हैं। सभी स्थलों पर शोकापन्न पात्रों में रूदन, प्रलाप, अश्रुपात, स्वरभंग, मूर्छा आदि अनुभावों की व्याप्ति मिलती है। जीवन से विरक्ति, दीनता, विषाद, भय, मोह, ग्लानि, दीनता, जड़ता, आवेग आदि संचारी भाव इन सभी स्थलों पर प्रकट होते हैं। दोनों ही रामायणों में करूण रस का उत्कृष्ट रूप उभरा है।

दोनों रामायणों की सम्पूर्ण रस योजना और उसके विभाजन व्यापार को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि दोनों रामायणों में शान्त रस अंगीरस है जिसका विकास क्रमशः

शृंगार, वीर, वीभत्स एवं करूण रस के माध्यम से चरम परिणति को प्राप्त हुआ है। शृंगार से प्रवृत्ति बढ़ती हुई संघर्ष में पहुंचती है, संघर्ष का परिणाम विनाशजन्य जुगुप्सा में परिवर्तित हो जाता है और संघर्षजन्य शोक भाव, सांसारिक क्षणिकता व मन की निराशा से विरिति का उदय होता है।

अहमदबख्श थानेसरी तथा यशवन्त सिंह वर्मा 'टोहानवी' जितने बड़े कवि और रामभक्त थे उतने ही बड़े कलाविद्। कला के सम्बन्ध में पूर्व और पश्चिम के अनेक विद्वानों ने अपने अपने ढंग से विचार किया है। कला के अभाव में सौन्दर्य की सृष्टि असम्भव है। सौन्दर्य को छोड़ देने के बाद न तो शिव का अस्तित्व है, न आनन्द का। कला सौन्दर्य की पोषाक हैं दोनों रामायणकारों ने कला की निरपेक्ष सत्ता का विवेचन किया है और कला के लिए कला के सिद्धांत पर विशेष बल दिया है। समाज सापेक्ष हो करके ही कला अर्थवान हो सकती है। दोनों रामायणकार इसी मत के समर्थक थे। उनकी दृष्टि में काव्य संबंधी सारा आयोजन स्वांतः सुखाय होते हुए भी परान्तः सुखाय ही था। 'स्व' और 'पर' का भेद उनकी दृष्टि में नहीं था।

दोनों रामायणकारों द्वारा हरियाणा में प्रचलित भाषाबद्ध करने के फलस्वरूप रामकथा में नयापन लाया गया है। हरियाणवी भाषा में लिखने का प्रयोजन था रामायणयि कथा की परम्परा को युगानुकूल बनाकर जनता तक सम्प्रेषित करना। उन्होंने अपने समसामयिक सांस्कृतिक परिवेश को दीर्घकालीन हरियाणवी परम्परा से जोड़कर शिष्ट, मर्यादित और नैतिकतापरक रूप देने की चेष्टा की है। ऐसा करने के कारण बहुत–सी बातें आज के युग के अनुकूल नहीं मालूम पड़ती। किन्तु समग्रतः उनका मूल्य आज के लिए भी है और आने वाले कल के लिए भी है। दोनों रामायणों में अलंकार के दोनों रूपों–शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का प्रयोग समुचित ढंग से हुआ है। लेकिन दोनों रामायणों में अर्थालंकारों की अपेक्षा शब्दालंकारों का प्रयोग अधिक किया गया है।

दोनों रामकथाकारों ने छंदों का प्रयोग भी करने का प्रयत्न किया है। परन्तु 'अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण' में 'आर्य संगीत रामायण' की अपेक्षा छंदों का प्रयोग अधिक किया गया है और सफलता प्राप्त की है। परन्तु यशवन्त सिंह छंदों के प्रयोग में असफल ही दृष्टि गोचर होते हैं। क्योंकि'आर्य संगीत रामायण' गद्य–पद्य शैली में लिखने के कारण वे छंदों के प्रयोग में अधिक सफल नहीं हो पाये।